



चना एवं मटर की उन्नत प्रजातियां

अर्चना देवी*, विजय कुमार विमल*, प्रीती कुमारी**,
अंशुमान द्विवेदी*** और डी.के. द्विवेदी***

॥ भारत में मटर 7.9 लाख हैक्टर भूमि में उगाई जाती है। इसका वार्षिक उत्पादन 8.3 लाख टन एवं उत्पादकता 1029 कि.ग्रा./हैक्टर है। मटर उगाने वाले राज्यों में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश प्रमुख हैं। उत्तर प्रदेश में 4.24 लाख हैक्टर क्षेत्र में मटर उगाई जाती है, जो कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश में 2.7 लाख हैक्टर, ओडिशा में 0.48 लाख हैक्टर क्षेत्र और बिहार में 0.28 लाख हैक्टर क्षेत्र में मटर उगाई जाती है। सर्वाधिक रूप से चने एवं मटर का प्रयोग बेसन के रूप में विभिन्न प्रकार के मीठे एवं नमकीन पकवानों को बनाने में किया जाता है। ॥

भारत, विश्व का सर्वाधिक चना उत्पादन करने वाला देश है। यहां विश्व के कुल उत्पादन का लगभग 64-65 प्रतिशत चना उत्पादित होता है। देश में चने की खेती रबी शरदकाल के मौसम में सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों में की जाती है। क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में 75 से 80 लाख हैक्टर क्षेत्र में चने की खेती की जाती है। देश के कुल चना उत्पादन का लगभग 95 प्रतिशत मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश,

*विषय वस्तु विशेषज्ञ (पादप प्रजनन), *विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान) कृषि विज्ञान केंद्र, कोटवा, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश); **ज्येष्ठ कृषि विपणन निरीक्षक, जौनपुर (उत्तर प्रदेश); ***प्रोफेसर, बायोटेक्नोलॉजी विभाग, आ.न.दे.कृ. एवं प्रो.वि., कुमारगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

कर्नाटक, छत्तीसगढ़, बिहार एवं हरियाणा राज्य से प्राप्त होता है। विगत वर्षों में शोध एवं प्रसार के प्रयासों के फलस्वरूप काबुली चने (सफेद दाना) की खेती एवं इसका उत्पादन बढ़ा है। देश के सभी प्रान्तों में, जहां चने की खेती होती है, काबुली एवं देसी, दोनों ही प्रकार की प्रजातियों को समान रूप से उगाया जाता है। शाकाहारी मनुष्य के आहार में चने का स्थान प्रोटीन देने वाले एक प्रमुख स्रोत के रूप में है। इसकी जड़ों में उपस्थित नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले जीवाणु वायुमंडल में उपस्थित नाइट्रोजन का यौगिकीकरण करके मृदा की उर्वराशक्ति में वृद्धि करते हैं। चने के दानों का प्रयोग आहार में छोले, दाल एवं सलाद के रूप में काफी प्रचलित है। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में चने की नई पत्तियों (नई

चने की संस्तुत प्रजातियां

देश के विभिन्न भागों के लिए राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर अब तक 125 से ज्यादा प्रजातियों का विकास एवं उनकी संस्तुति की गई है। उत्तर प्रदेश की संस्तुत प्रजातियों के नाम सारणी में दिए गए हैं। इन सभी संस्तुत प्रजातियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी एवं बीज के लिए इच्छुक किसान एवं अन्य उत्पादक राष्ट्रीय बीज निगम, राज्य बीज निगम, विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर से सम्पर्क कर सकते हैं।

चने की उन्नत प्रजातियां

डी.सी.पी. 92-3, पन्त जी 186, के.डब्ल्यू.आर. 108, जी.पी.एफ. 2, जी. एन.जी. 1581, गुजरात चना 4, जे.जी. 16, करनाल चना 1, पूसा 256, पूसा 372, वरदान, जे.जी., 315, उदय, आलोक, विश्वास, हरियाणा चना, सम्राट, जी. पी.एफ. 2, करनाल चना 1, पूसा 1003, सद्भावना, प्रगति, सूर्या, शुभा (आई.पी. सी. के. 2002-29), राजस पूसा 547, हरियाणा काबुली चना 2 आदि।

शाखाएं एवं पत्तियों) का हरी सब्जी (साग) के रूप में सेवन किया जाता है।

प्रजातियों का चयन

देश के विभिन्न प्रदेशों के लिए समय-समय पर राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तर पर चना एवं मटर की कई प्रजातियां संस्तुत की गई हैं। प्रमुख रूप से उकठा रोगरोधी, अंगमारी रोगरोधी, शीघ्र पकने वाली एवं देर से बोई जाने के लिए उपयुक्त, बड़े दाने की देसी एवं काबुली चने एवं विशेष परिस्थितियों के लिए उपयुक्त प्रजातियों का विकास एवं उनकी संस्तुति की गई है। अखिल भारतीय चना सुधार परियोजना एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के समन्वित प्रयासों के फलस्वरूप विगत 20-22 वर्षों में लगभग 75 से ज्यादा प्रजातियों का विकास किया गया है। प्रमुख प्रजातियों का विवरण सारणी में दिया गया है।



चने की फलियां

सारणी: मटर की प्रमुख प्रजातियां

प्रजाति	उत्पादन क्षमता (क्विंटल/हेक्टर)	संस्तुत क्षेत्र	विशेष गुण	पकने की अवधि (दिनों में)
लंबी प्रजातियां				
रचना	20-22	पूर्वी एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	सफेद फफूंद अवरोधी	125-140
मालवीय मटर-2	20-25	पूर्वी मैदानी क्षेत्र	सफेद फफूंद अवरोधी	120-140
शिखा	20-25	पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	सफेद फफूंद अवरोधी	130-140
अलंकार	20-25	पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	सफेद फफूंद अवरोधी	115-135
	20-22	मध्य क्षेत्र	सफेद फफूंदअवरोधी	100-125
बौनी प्रजातियां				
अपर्णा	25-30	मध्य पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्र	सफेद फफूंद अवरोधी	120-140
सपना	20-25	उत्तर प्रदेश	सफेद फफूंद अवरोधी	120-140
स्वाति	25-30	उत्तर प्रदेश	सफेद फफूंद अवरोधी	120-140
उत्तरा	25-30	पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	सफेद फफूंद अवरोधी	125-140
मालवीय मटर 15	25-30	पूर्वी मैदानी क्षेत्र	सफेदफफूंदएवं रेतुआ रोग अवरोधी	125-140
के.पी.एम.आर-400	20-25	मध्य क्षेत्र	सफेद फफूंद अवरोधी	110-125
के.पी.एम.आर-522	25-30	पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	सफेद फफूंद अवरोधी	125-140
पूसा प्रभात	18-20	पूर्वी मैदानी क्षेत्र	अल्पकालिक	100-110
पूसा पन्ना	18-20	पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	अल्पकालिक	100-110

रोगरोधी प्रजातियां

इन प्रजातियों के विकास को महत्वपूर्ण माना गया है। उकठा रोग के प्रति अवरोधी एवं अंगमारी रोग से सहनशील प्रजातियां निम्नवत हैं:

उकठा रोगरोधी

के.डब्ल्यू.आर. 108, जे.जी. 11, राजस, हरियाणा चना 1, डी.सी.पी. 92-3, जी.सी.पी. 101, जी.सी.पी. 105, जे.जी. 315, जी.पी.एफ. 2, विजय, आलोक, जे. जी. 74, जे.जी. 322, जी. एन. जी. 663, उदय, शुभ्र (आई.पी.सी.के. 2002-29), पूसा चमत्कार, पूसा काबुली 1003, अन्नेगिरी, विकास, महामाया 1, धारवाड़ प्रगति, सम्राट, जे.जी. 16, जी.एन.जी. 15811

अंगमारी रोग सहनशील

सम्राट, पी.बी.जी. 5. हिमाचल चना।

बड़े दाने की

काबुली चना तथा बड़े दाने की संस्तुत प्रजातियां निम्नवत हैं। इनकी खेती से किसानों को अधिक लाभ मिल सकेगा।

देसी चना (20 ग्राम से ज्यादा प्रति 100 दानों का वजन) पूसा 256, सम्राट, पूसा 391, धारवाड़ पूसा 362, सी.ओ. 3, सी.ओ. 4

काबुली चना (25 ग्राम से ज्यादा प्रति 100 दानों का वजन) शुभा (आई.पी.सी.के. 2002-29), आई.सी. सी.बी. 2, के.ए.के. 2, पूसा काबुली 1003, पूसा चमत्कार, जवाहर काबुली चना 1, फूले जी. 95322, बिहार के.ए.के. 2, शुभा (आई.पी.सी.के. 2002-29), जवाहर काबुली चना 1, फूले जी. 95322 तथा पूसा चमत्कार का दाना बड़ा (लगभग 30 ग्राम प्रति 100 दाने) होता है।



मटर की पुष्ट उपज

देर से बोने के लिए

पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश एवं बिहार के उन भागों के लिए, जहां धान की फसल के बाद चने की खेती की जाती है में उदय, पूसा 547, राजस एवं पूसा 372 की संस्तुति की गई है। इन प्रजातियों को दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक बोया जा सकता है। इसी तरह उत्तर प्रदेश में पन्त जी. 186 को देर से बोया जा सकता है।

अन्य विशेष परिस्थितियों के लिए

जिन क्षेत्रों में शरदकालीन वर्षा होती है या अधिक नमी या मृदा की उर्वरता के कारण ज्यादा वानस्पतिक वृद्धि होने से चने के पौधे गिर जाते हैं तथा भरपूर उपज नहीं मिलती है, वहां डी.सी.पी. 92-3 की खेती करने से भरपूर लाभ कमाया जा सकता है। इसी प्रकार लवणता सहनशील प्रजाति करनाल चना 1 (सी.एस.जी. 8962) की बुआई से साधारण लवणता वाले क्षेत्रों में चने की अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है।



चने की लहलहाती स्वस्थ फसल